

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 7

अपराजिता

शिवानी (1923 -2003)

भाग – 4

अभ्यासमाला

कीर्ति बसुमतारी

(ई) आशय स्पष्ट करो (लगभग 100 शब्दों में):

1. नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी।

(ई) आशय स्पष्ट करो (लगभग 100 शब्दों में):

1. नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी।

उत्तर : लेखिका ने जब पहली बार डॉ. चंद्रा को देखा, तो वह आश्चर्यचकित रह गई। शारीरिक रूप से अपंग होने के बावजूद चंद्रा हँसी-खुशी जीवन जी रही थी।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उसने नियति के कठिन आघात को धैर्य, साहस और अदम्य इच्छाशक्ति के साथ झेला। उसने कभी विधाता को कोसा नहीं और हमेशा उमंग और उत्साह के साथ जीवन जिया। हर क्षेत्र में उसने अपने आप को साबित किया कि वह साधारण लोगों की तरह कष्ट कर कुछ हासिल कर सकती है। उसकी ये उपलब्धियाँ देखकर लेखिका को लगा कि चंद्रा किसी देवांगना से कम नहीं, क्योंकि उसने अपंग होते हुए भी अद्भुत सफलता हासिल की।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।

उत्तर : यह शब्द चंद्रा की माता साहसी जननी शारदा सुब्रहमण्यम् के है, जो लेखिका के कानों में बार-बार गूंज रहे थे।

चंद्रा शारीरिक रूप से अपंग होने के कारण चिकित्सा में प्रवेश नहीं ले पाई, जबकि परीक्षा में उन्होंने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था। परीक्षकों ने अपंगता का कारण बताते हुए प्रवेश नहीं दिया।

लेकिन चंद्रा ने हार नहीं मानी और विज्ञान में रुचि ली। अपनी प्रतिभा, निष्ठा और मेहनत से डॉ. चंद्रा ने डॉक्टरेट की डिग्री हासिल की। यदि वह चिकित्सक न बन पाने पर वहीं रुक जातीं, तो वह कुछ हासिल नहीं कर पाती।

इस उपलब्धि को देखकर लेखिका के कानों में माता के शब्द गूंज उठते हैं: "ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।-

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भाषा-अध्ययन —



1. हिन्दी में अंग्रेजी की स्वर ध्वनि 'ओं' का आगम हुआ। यद्यपि इसका उच्चारण हिन्दी की ध्वनि 'औ' की भाँति होता है परंतु वास्तव में यह 'ऑ' है 'औ' नहीं। इसमें मुख को थोड़ा गोलाकार करना पड़ता है।

जैसे – काल (समय), कॉल (बुलावा), कौल (शपथ)। तीनों के उच्चारण और अर्थ में अंतर दिखाई देता है।

निम्नलिखित शब्दों को बोलकर पढ़ो) डॉक्टर, कॉलेज, बॉल, कॉन्वेंट, ऑफ-

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

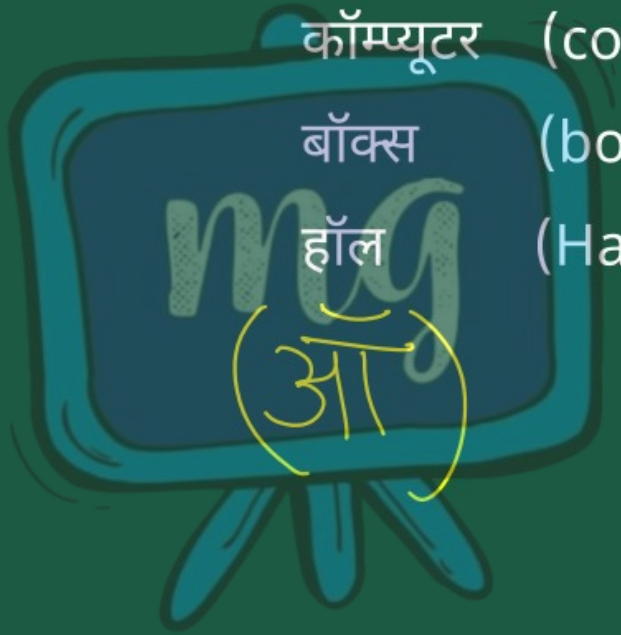
Under CSR Support by
ipca | Foundation

कॉफ़ी (coffee)

कॉम्प्यूटर (computer)

बॉक्स (box)

हॉल (Hall)



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. पाठ में कुछ ऐसे शब्द आए हैं जिनका अर्थ एक से नहीं, अनेक शब्दों से अर्थात् वाक्यांश से स्पष्ट हो सकता है।

जैसे 'जिजीविषा' अर्थात् जिसमें जीने की इच्छा हो।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ वाक्यांश में दो: अभिशप्त, आभामंडित, सुदीर्घ, निष्प्राण, सहिष्णु

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उत्तर : अभिशप्त : जो शाप या श्राप से ग्रस्त हो।

आभामंडित : जिसके चारों ओर आभा, चमक या प्रकाश हो।

सुदीर्घ : जिसका समय बहुत लंबा हो।

निष्प्राण : जिसमें प्राण न हों/ निर्जीव।

सहिष्णु : जो सहन करने की क्षमता रखता हो, सहनशील एवं धैर्यवान।